B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
आधुनिक काल

Ajanta
Page No.
Date

प्रश्न :- द्विवेदीयुगीन काव्य का परिचय दें।

उत्तर :- भारतेन्दु युग यदि आधुनिक काल का प्रवेश द्वार है, तो द्विवेदी युग उसका विस्तृत प्रांगण, जहाँ कविता सुन्दरी को फलने-फूलने एवं विकसित होने का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। भारतेन्दु जी ने देश-प्रेम की जिस मशाल को प्रज्ज्वलित किया, द्विवेदी युग में आकर वह पूर्ण प्रकाश से युक्त होकर अपनी आभा बिखेरने लगी। इस युग का नामकरण सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं निबन्ध लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के गरिमामंडित व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर किया गया है। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी जगत की जो सेवा की है, उससे हम कभी उऋण नहीं हो सकते। यह पत्रिका अपने में एक संस्था थी, जिसने कितने ही नये कवियों एवं लेखकों को जन्म दिया। इस पत्रिका के माध्यम से द्विवेदी जी ने भाषा संस्कार, व्याकरण शुद्धि, विराम-चिह्नों के प्रयोग द्वारा हिन्दी को परिनिष्ठित रूप प्रदान करने का स्तुत्य प्रयास किया तथा काव्यभाषा के पद पर दीर्घकाल तक प्रभुत्व बनाये रखने वाली ब्रजभाषा के एकछत्र शासन को समाप्त कर खड़ीबोली को काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया। 'कवि-कर्तव्य' जैसे निबन्धों के द्वारा उन्होंने कवियों को अनेक निर्देश दिए, जिससे विषय भाषा-शैली, छंद योजना आदि दृष्टियों से काव्य में नवीनता का समावेश हुआ।

द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका का सम्पादन सन् 1903 ई० में संभाला था, अतः द्विवेदी युग की समय सीमा सन् 1900 ई० से 1920 ई० तक मानी जा सकती है। 1920 ई० के उपरांत काव्य क्षेत्र में छायावादी प्रवृत्तियों की प्रमुखता परिलक्षित होने लगी थी। उन्नीसवीं शताब्दी का अंत होते-होते जनरुचि में परिवर्तन होने लगा। कविता केवल समस्या-पूर्ति तक सीमित न रही अपितु उसमें नवीन विषयों एवं

भावों का समावेश हुआ। भारतेन्दु युग में जनजागरण का जो कार्य प्रारम्भ हुआ, द्विवेदी युग में उसे और आगे बढ़ाया गया। अतः कविता में राष्ट्रीयता, देशप्रेम, स्वदेशाभिमान की भावना अधिक मुखर रूप में सामने आयी। समाज सुधार, नव जागरण, आदर्शवाद एवं नैतिकता पर विशेष बल दिया गया। आर्य समाज एवं ब्रह्म समाज का प्रभाव द्विवेदी युग के कवियों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, क्योंकि वे नारी के कामिनी रूप से आँखें चुराते हैं और उसे सती वीरांगणा या देवी के रूप में देखना ही पसन्द करते हैं।

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी स्वयं कोई बड़े कवि न थे, किन्तु उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक (1903-1920) के रूप में हिन्दी काव्य का बहुत बड़ा उपकार किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जैसे प्रतिभा सम्पन्न कवि 'द्विवेदी जी' की देन हैं, स्वयं गुप्त जी ने साकेत में स्वीकार करते हुए लिखा है—

करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद।
'महावीर' का यदि नहीं मिलता उन्हें प्रसाद।।

जैसे तुलसीदास जी ने हनुमान की कृपा से रामचरितमानस की रचना की, वैसे ही मैथिलीशरण जी ने 'महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की कृपा से साकेत की रचना की। द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों में- नाथूराम शर्मा 'शंकर', महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राय देवी प्रसाद 'पूर्ण', रामचरित उपाध्याय, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, बालमुकुन्द गुप्त, लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि उल्लेखनीय हैं।

साकेत (मैथिलीशरण गुप्त) और प्रियप्रवास (अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध') इस युग के दो प्रमुख महाकाव्य हैं, जिन्हें खड़ी बोली का महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है।

अभ्यासार्थ-प्रश्न

प्रश्न- द्विवेदीयुगीन काव्य पर एक नोट लिखें।

प्रस्तुति:- डॉ० समरेश कुमार, विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक- 17.02.2023, मो० नं०- 7909046087